प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 7 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

गर्व से बोलिए अपनी जुबान में। एक बार विदेशी भाषा बोलने वाले के सामने पूरे विश्वास और दम के साथ अपनी भाषा में बात कीजिए, हकलाए या हड़बड़ाए बिना। अपनी जड़ों पर मजबूती से टिके रहिए। हमारी पहचान और उसका पूरा ज्ञान एक बार विदेशियों के पैर उखाड़ चुका है। यह प्रामाणिक तरीका है। आजमाया हुआ नुस्खा। खुद पर नाज कीजिए। अपनी भाषा में अपनी बात कहिए। दुनिया को सुनना और समझना आ जाएगा।

हिंदी बोलते हुए बीच–बीच में अंग्रेजी बोलने को शान क्यों समझा जाता है? काश, ऐसे लोगों को अहसास कराया जाए कि आपको खुद की ही जुबान नहीं आती। आखिर अंग्रेजी बोलते वक्त हम बीच में हिंदी तो नहीं बोलते। भाषाएँ सीखने में कोई हर्ज नहीं। भाषा कोई भी हो, भली ही है, लेकिन अपनी भाषा का तिरस्कार और दूसरी का सत्कार क्यों? जड़ से कटा पेड़ नकली ही हो सकता है, असली नहीं। आप हिंदुस्तानी हैं, हिंदी हमारी भाषा है। उसमें बतियाने या काम करने में भी हमको गर्व होना चाहिए।

1. अपनी जड़ों पर मजबूती से टिके रहने से क्या आशय है? 2

उत्तर : अपनी जड़ों पर मजबूती से टिके रहने से आशय है– अपनी भाषा में बात करना।

2. किन लोगों को क्या अहसास कराया जाए? 2

उत्तर : जो लोग हिंदी बोलते हुए बीच–बीच में अंग्रेजी बोलने को शान समझते हैं, ऐसे लोगों को यह अहसास कराया जाए कि उन्हें खुद की ही जुबान नहीं आती।

3. लेखक के अनुसार जड़ से कटा पेड़ से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : लेखक के अनुसार जड़ से कटा पेड़ वह है जो अपनी भाषा की अवहेलना करके विदेशी भाषा में बात करता है।

4. अपनी बात अपनी भाषा में ही क्यों कहनी चाहिए? 2

उत्तर : अपनी बात अपनी भाषा में ही कहनी चाहिए, क्योंकि दुनिया को सुनना और समझना सिखाने के लिए यह आवश्यक है। इससे हमारी पहचान बनती है।

5. गद्यांश में निहित संदेश बताइए। 1

उत्तर : गद्यांश में हिंदी में बात करने पर गर्व करने का संदेश दिया गया है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : मातृभाषा– हिन्दी।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. जो लोग ईर्ष्या करते हैं, मुझे पसंद नहीं। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : ईर्ष्या करने वाले लोग मुझे पसंद नहीं।

2. वे लोग घूमने के लिए बगीचे में गए थे। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वे लोग बगीचे में गए थे क्योंकि उन्हें घूमना था।

3. केले खाकर बंदर चला गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : बंदर ने केले खाए और चला गया।

4. जो लोग मेहनती होते हैं, वे उन्नति करते हैं। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मेहनती लोग उन्नति करते हैं।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. क्या तुम्हारे द्वारा इन्द्रधनुष देखा गया है? (कर्तृवाच्य में

बदलिए)

उत्तर : क्या तुमने इन्द्रधनुष देखा?

2. चिड़िया उड़ नहीं पाती। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : चिड़ियों से उड़ा नहीं जाता।

3. वह लिख नहीं सकता। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : उससे लिखा नहीं जा सकता।

4. हमारी टीम द्वारा मेच खेला गया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : हमारी टीम ने मेच खेला।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. दिव्या ने कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक (**ने** परसर्ग सहित), **है** तथा **कहा** क्रिया पदों की कर्ता।

2. वह तुम्हें आने को कहेगा।

उत्तर : पुरूषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरूष, स्त्री पुरूष उभयलिंग में प्रयुक्त हो सकता है, एकवचन, कर्म कारक, **कहेगा** क्रिया का कर्म।

3. विकास ने तुमसे क्या पूछा?

उत्तर : प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, **पूछा** क्रिया के कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

4. रवि ने कक्षा में छोटी कहानी सुनाई।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, परसर्ग-रहित **सुनाई** क्रिया का कर्म।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. वीर रस का स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : वीर रस का स्थाई भाव **उत्साह** है।

2. निम्नलिखित काव्यांश में निहित रस बताइए।

ललन चलन सुनि पलन में आय गयो बहु नीर।
अधखंडित बीरी रही, पीरी परी सरीर।।

उत्तर : काव्यांश में **वियोग श्रृंगार** रस है।

3. घृणा किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : घृणा (जुगुप्सा) **वीभत्स** रस का स्थायी भाव है।

4. ठुमुक चलत रामचंद्र बाजत पैंजनिया पंक्ति में रस बताइए।

उत्तर : इस पंक्ति में **वात्सल्य** रस है।

5. अद्भुत रस का स्थाई भाव लिखिए।

उत्तर : अद्भुत रस का स्थाई भाव **आश्चर्य** है।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

कातिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सबेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जगकर वह नदी-स्नान को जाते गाँव से दो मील दूर! वहाँ से नहा धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ, किन्तु एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा और घर सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रहीं थीं। गाते-गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार-बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किन्तु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रमबिन्दु जब-तब चमक ही पड़ते।

1. बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कब होती थीं? 2

उत्तर : बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कातिक से शुरू होकर फागुन तक चलती थीं।

2. लेखक को माघ की दाँत किटकिटाती भोर में पोखरे तक कौन ले गया था? उस समय का वातावरण कैसा था? 2

उत्तर : लेखक को माघ की दाँत किटकिटाती भोर में पोखरे तक बालगोबिन भगत का संगीत ले गया था। यहाँ वे खँजड़ी लिए प्रभाती गा रहे थे। इस समय का वातावरण रहस्यपूर्ण था। आसमान के तारे अभी बुझे नहीं थे। आसमान में लालिमा आ गई थी। खेतों, बगीचों और घरों के इर्द-गिर्द कुहासा छा रहा था।

3. प्रभाती गाते समय बालगोबिन भगत का हाव-भाव कैसा था और उनकी शारीरिक मानसिक दशा कैसी हो रही थी? 2

उत्तर : बालगोबिन भगत पूरब को मुँह किए, काला कंबल ओढ़े अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। वे लगातार गाए जा रहे थे और उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर अनवरत चल रही थीं। गाते-गाते वे इतने विभोर और उत्तेजित हो जाते कि मालूम होता अब खड़े हो जाएँगे। उनकी कमली सिर से सरकने लगती और माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगती।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. पानवाले के लिए यह एक मजेदार बात थी लेकिन हालदार

साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। इस पंक्ति में किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : हालदार साहब जानना चाहते थे कि नेताजी की मूर्ति का ओरिजिनल (वास्तविक) चश्मा कहाँ गया? पानवाले द्वारा इस प्रश्न के उत्तर में यह कहना कि मूर्ति बनाने वाले विद्यालय के ड्राइंग-मास्टर नेताजी का चश्मा बनाना ही भूल गए। यह बात हालदार साहब को चकित और द्रवित करने वाली थी जबकि पानवाला इस बात पर कटाक्ष करके मजा ले रहा था। इस पंक्ति में अपने देशभक्त महापुरूषों के प्रति हमारी बढ़ती असम्मान की भावना की ओर संकेत किया गया है।

2. बालगोबिन भगत का संगीत किस प्रकार लोगों के सिर चढ़कर बोलता था?

उत्तर : आषाढ़ के दिनों में जब समूचा गाँव खेतों में उमड़ पड़ता था तो बालगोबिन भगत कीचड़ में सने धान की रोपाई करते हुए गीत गाने लगते। उनका संगीत लोगों पर जादू कर देता था। औरतों के होंठ काँपने लगते व गुनगुनाने लगतीं। बच्चे झूम उठते। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते। रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ उसी क्रम में चलने लगतीं। लोगों के हाथ-पैर थिरकने लगते। रात के सन्नाटे में भी लोग उनके पास खिंचे चले आते थे।

3. **लखनवी अंदाज** पाठ में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **लखनवी अंदाज** पाठ में लेखक ने प्राचीन शाही परम्परा पर व्यंग्य किया है, जो झूठी शान से जीते हैं एवं वास्तविक स्थिति को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे में उनका जीवन सतही हो जाता है। जो इस तरह व्यर्थ के दिखावे में अपनी शान समझते हैं। वास्तव में वे स्वयं से ही धोखा कर रहे होते हैं। यह पाठ उन लोगों पर व्यंग्य करता है जो बिना पात्र, घटना एवं कथन के कहानी लिखने का प्रयास करते हैं जबकि इनके अभाव में कहानी का अस्तित्व ही संभव नहीं है।

4. सिद्ध कीजिए कि बिस्मिल्लाह खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

उत्तर : बिस्मिल्लाह खाँ ने हिंदु और मुस्लिम दोनों धर्मों का समान रूप से आदर किया था। मुहर्रम पर नोहा बजाकर एक ओर वे हजारों वर्ष पुरानी परम्परा को पुनर्जीवित करते थे तो दूसरी ओर प्रति वर्ष संकट मोचन मंदिर पर संगीत आयोजन में हमेशा हिस्सा लेते थे। काशी से बाहर जाकर भी शहनाई बजाते हुए पहले विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठकर अपनी अपार श्रद्धा प्रकट करते थे। वे गंगा को गंगा मैया और भगवान विश्वनाथ को बाबा कहते थे। संगीत, साहित्य और इनसे मिलकर बनी काशी की संस्कृति ही उनका जीवन था।

5. हालदार साहब की नेता जी के प्रति श्रद्धा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : **नेताजी का चश्मा** कहानी में हालदार साहब को एक देशभक्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक साधारण से कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर नेता जी की मूर्ति देखकर वे खुश हो जाते हैं तथा वहाँ ऐसी मूर्ति लगाए जाने के प्रयास को सफल और सराहनीय कहते हैं। फौजी वर्दी में नेता जी की मूर्ति देखते ही उन्हें **दिल्ली चलो** तथा **तुम मुझे खून दो.....** आदि देशभक्ति भरे नारे याद आने लगते हैं। नेता जी के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा है। कैप्टन द्वारा नेताजी की आँखों पर चश्मा लगाया जाना उन्हें प्रभावित करता है। उसकी मृत्यु पर वे दुखी हो जाते हैं।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 6

नाथ संभुधनु भंजनिहारा।
होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही।
सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई।
अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।
न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने।
बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाई।
कबहूँ न असि रिस कीन्हि गोसाई।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतु।
सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु।।
रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार।।

1. परशुराम के क्रोधित होने का क्या कारण था? 2

उत्तर : सीता स्वयंवर में शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए श्रीराम द्वारा शिव-धनुष के टूट जाने के कारण परशुराम क्रोधित हुए।

2. परशुराम की ललकार पर श्रीराम ने क्या कहा? 2

उत्तर : परशुराम की ललकार सुनकर श्रीराम ने कहा हे नाथ, आपके किसी दास के अलावा भला और कौन हो सकता है जो शिव के धनुष को तोड़ सकता है? उन्होंने स्वयं को उनका सेवक बताया।

3. लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचन सुनकर परशुराम ने धनुष के बारे में

क्या बताया? 2

उत्तर : परशुराम ने लक्ष्मण को बताया कि यह कोई सामान्य धनुष नहीं है। यह भगवान शिव का धनुष है। समस्त विश्व में प्रसिद्ध है। इसकी तुलना सामान्य धनुहियों से करना मूर्खता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. किसकी आवाज में हिचक साफ सुनाई देती है और क्यों?

उत्तर : मुख्य गायक के संगतकार की आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है क्योंकि वह अपनी आवाज को मुख्य गायक की आवाज से अधिक ऊँचा उठाना नहीं चाहता। मुख्य गायक की आवाज को ऊँचाई और बल देना उसका धर्म है। वह अपने इसी धर्म का पालन करता है। अपनी श्रेष्ठता दिखाने का प्रयास नहीं करता।

2. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन–कौनसे तर्क दिए?

उत्तर : शिव धनुष टूटने पर जब परशुराम अत्यंत क्रुद्ध हुए तो लक्ष्मण ने कहा कि श्रीराम ने तो इसे नया और मजबूत समझकर छुआ था। यह तो बहुत पुराना और जर्जर था तभी तो श्रीराम के हाथ लगते ही वह टूट गया। फिर इसमें उनका क्या दोष? दूसरी बात लक्ष्मण ने कही कि बचपन में हमने न जाने कितनी ऐसी धनुहियाँ तोड़ी हैं तब तो आप क्रोधित नहीं हुए। अब इसमें ऐसी कौनसी विशेषता है कि आप हम पर क्रोधित हो रहे हैं? इस धनुष के टूटने पर तो हमें कोई लाभ–हानि की बात समझ में नहीं आती।

3. कविता में बादल किन–किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर : कविता में बादल एक ओर फुहार, रिमझिम और बरसने के अर्थ में जीवन का आवश्यक तत्व पानी प्रदान कर सुख, शांति और समृद्धि का संकेत करता है। दूसरी ओर गर्जन के साथ प्रयुक्त होकर विध्वंस, विप्लव और क्रांतिकारी चेतना का आह्वान करने वाला बनता है। यह नवनिर्माण कर नवजीवन प्रदान करने वाला भी बनता है।

4. गोपियों ने किसकी तुलना कड़वी ककड़ी से की है और क्यों?

उत्तर : गोपियों ने योग ज्ञान की तुलना कड़वी ककड़ी से की है। उनका कहना था कि जिस प्रकार कड़वी ककड़ी खाई नहीं जाती उसी प्रकार उद्धव द्वारा कही गई योग ज्ञान की बातें उन्हें स्वीकार नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने मन में श्रीकृष्ण को बसा लिया है। वे उन्हीं का नाम रटती रहती हैं। कृष्ण ही उनके लिए सब कुछ हैं। उनका मन श्रीकृष्ण में रम गया है। अतः उन्हें किसी योग की कोई आवश्यकता नहीं है।

5. सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का, आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : पौधों के अस्तित्व को बनाए रखने में सूरज की किरणों के साथ–साथ हवा की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पौधों को हवा की भी आवश्यकता होती है। पौधे हवा में ही साँस लेते हैं। पानी में जीवनदायी अमृत तत्व मिले होते हैं, जिन्हें पाकर फसलें फल–फूलकर बड़ी होती हैं। बहती हुई हवा का अंश पौधों में संकुचित होकर समा जाता है। ऐसा लगता है कि हवा की थिरकन संकुचित होकर इन फसलों में सिमट गई हैं हवा के कारण फसल लहलहाती है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. **माता का अँचल** पाठ में बच्चा किसकी ओर ज्यादा आकर्षित होता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **माता का अँचल** पाठ में भोलानाथ के पिता उनको बहुत प्यार करते थे। उन्हें हमेशा अपने साथ ही रखते थे। अपने साथ ही खिलाते–पिलाते और सुलाते थे। इसके बावजूद भोलानाथ अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे। उसे अपनी माँ की गोद में ही शांति मिलती थी। माँ भी उसे बहुत प्यार करती थीं।

2. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या–क्या यत्न किए?

उत्तर : सबसे पहले मूर्तिकार ने पुरातत्व विभाग की फाइलों से पता करवाया कि जॉर्ज पंचम की लाट का पत्थर कहाँ से लाया गया था। वहाँ से पता न चला तो उसने पूरे हिन्दुस्तान के पहाड़ों और खानों में वैसा पत्थर खोजा। पर जब वैसा पत्थर भी नहीं मिला तो उसने महापुरूषों की बनी मूर्तियों की नाकों को काटकर लगाने के लिए पूरे देश का दौरा किया। उसने सभा में भारत के एक नागरिक की जिंदा नाक काटने की भी अनुमति माँगी। कमेटी वालों से मदद लेकर मूर्तिकार ने जॉर्ज पंचम की मूर्ति के आस–पास साफ पानी भरवाया और अगले दिन जिंदा नाक मूर्ति पर फिट कर दी।

3. गैंगटॉक को मेहनतकश बादशाहों का **शहर** क्यों कहा गया है?

उत्तर : गैंगटॉक के लोग मेहनती थे। वहाँ पुरूष ही नहीं, स्त्रियाँ और बच्चे भी कड़ी मेहनत करते हैं। स्त्रियाँ और बच्चे चाय के बागानों में काम करते हैं। सूरज ढलने तक गायों को चराना, जंगल से लकड़ियाँ लाना और बच्चों को भी इन कामों की शिक्षा देने का काम हँसते–हँसते करके स्त्रियाँ घर और बाहर की जिम्मेदारी संभालती हैं। सीमा पर पहरा देते हुए जवान भी शून्य से 15 डिग्री नीचे गिरे तापमान में पर्यटकों का मुस्कुराकर स्वागत करते हैं, इसलिए गैंगटॉक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) भारत एवं साम्प्रदायिक एकता

संकेत बिंदु : भूमिका ✻ भारत का गौरवपूर्ण इतिहास ✻ अनेकता में एकता ✻ साम्प्रदायिक एकता को बनाए रखने के उपाय ✻ उपसंहार।

(2) जल संकट

संकेत : प्रस्तावना ✻ जीवन में जल संकट का महत्व ✻ जल संकट के कारण एवं समस्याएँ ✻ समाधान ✻ उपसंहार।

(3) आई.आई.टी– जे.ई.ई.

संकेत : भूमिका ✻ आई.आई.टी. का इतिहास ✻ योग्यताएँ ✻ अन्य उपलब्धियाँ।

उत्तर :

(1) भारत एवं साम्प्रदायिक एकता

संकेत बिंदु : भूमिका ✻ भारत का गौरवपूर्ण इतिहास ✻ अनेकता में एकता ✻ साम्प्रदायिक एकता को बनाए रखने के उपाय ✻ उपसंहार।

भूमिका– भारतवर्ष एक विशाल देश है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का इतिहास बहुत प्राचीन है। एकता एवं भावनात्मक एकता के प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक भाषाओं, धर्मों एवं रीति–रिवाजों के होते हुए भी भारत एक है। विभिन्नता में अभिन्नता तथा अनेकता में एकता की भावना के कारण ही आज तक भारत एक है।

भारत का गौरवपूर्ण इतिहास– भारत विविधताओं में एकता का देश है। इसके अंदर भौतिक विषमताओं के साथ–साथ, धर्म, भाषा, वर्ण, रूप–रंग, खान–पान और आचारों–विचारों में भी विषमता है किन्तु यह सुसंगठित देश है। इतिहास साक्षी है कि जब कभी विखण्डन की समस्या उत्पन्न हुई, समस्त देशवासियों ने देश की अखण्डता को बनाए रखा।

अनेकता में एकता– राष्ट्रीय एकता एक प्रबल शक्ति है। यह वीरता और बलिदान के कार्यों को बढ़ावा देती है और जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है। यह देशवासियों को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। संसार के लोगों ने राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित होकर अपूर्व उन्नति की है।

साम्प्रदायिक एकता को बनाए रखने के उपाय– अब हमें अपनी आजादी की रक्षा के लिए आंतरिक संगठन और भावात्मक एकता को मजबूत रखना होगा। हमारे मन में यह विचार सुदृढ़ रहना चाहिए कि हमने भारत भूमि में जन्म लिया है। इस वातावरण ने हमें पाला है। अतः इसकी प्रकृति और संस्कृति की तथा भारतीय गौरव की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमें दलगत एवं वर्गगत स्वार्थों को छोड़कर समूचे राष्ट्र का हितचिंतक बनना है। राष्ट्र निर्माण हेतु हमें तन, मन, धन से योगदान करना है। हमें अब ऐसे वातावरण का ढाँचा तैयार करना चाहिए जिसमें अखिल भारतीय एकता का संचार हो और जिसमें विघटनकारी साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों को पनपने का अवसर न मिल सके।

उपसंहार– आज का समाज राजनीतिज्ञों के चंगुल में फँसा है। कदम–कदम पर गुटबंदी और दलबंदी का आतंक है। आज का नेता स्वार्थसिद्ध न होने पर साम, दाम, दण्ड, भेद सभी साधनों को अपनाकर जनता को अपने पक्ष में लाने का प्रयास करता है। इससे विचारों में संकीर्णता आती है और एकता की भावना नष्ट होती है। कभी–कभी व्यर्थ के विवाद इतने बढ़ जाते हैं कि उनसे आंतरिक शांति भंग हो जाती है। इसलिए देश के नेताओं का यह परम कर्तव्य है कि वे स्वार्थपरता और गुटबंदी के विचारों को छोड़कर समस्त राष्ट्र का हितचिंतन करते हुए जनता में राष्ट्रीय एकता के भाव उत्पन्न करें।

(2) जल संकट

संकेत : प्रस्तावना ✻ जीवन में जल संकट का महत्व ✻ जल संकट के कारण एवं समस्याएँ ✻ समाधान ✻ उपसंहार।

प्रस्तावना– जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। समूची प्रकृति में चाहे वनस्पतियाँ हों या जीव जन्तु सभी के जीने के लिए जल अनिवार्य रूप से आवश्यक है किन्तु हमारी भूल और अनदेखी के कारण आज जल संकट एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है। आज भारत ही क्या विश्व के सभी देश जल संकट को भविष्य की गंभीर समस्या मान रहे हैं और इस समस्या के समाधान के लिए निरंतर चेतावनी दे रहे हैं।

जीवन में जल संकट का महत्व– यूँ तो पृथ्वी का दो–तिहाई भाग जल ही है लेकिन इसमें से समूचा जल उपयोग के लायक नहीं है। कुछ तो खारे समुद्र के रूप में है और कुछ बर्फ के रूप में जमा हुआ है। पेयजल का अधिकांश भाग हमें बहती हुई नदियों और भूमिगत जल से प्राप्त होता है। यह भूमिगत जल अत्यधिक दोहन के कारण निरंतर घटता जा रहा है। वर्षा चक्र पेड़ पौधों तथा वन्य क्षेत्रों पर निर्भर है।

जल संकट के कारण एवं समस्याएँ– आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य ने जहाँ एक ओर वन संपदा को नष्ट करके वर्षाचक्र को बिगाड़ दिया है वहीं दूसरी ओर उद्योगों के घातक रासायनिक कचरे को बहाकर नदियों को नाला बना दिया है। यही नहीं कुछ उद्योगों में तो थोड़े से लाभ के लिए जहर सरीखे कचरे को पाइप लाइन से पृथ्वी मे डाल दिया जाता है। दूसरी ओर जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण हम लगातार भूमिगत जल का दोहन करने में जुटे हुए हैं जिससे अब जलस्तर तीस चालीस फीट से नीचे गिरते–गिरते सौ–चार सौ फीट नीचे तक जा पहुँचा है।

समाधान– पेयजल संकट के उपर्युक्त तीनों प्रमुख कारण– पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण, भूमिगत जल का दोहन में से किसी भी कारण को रोक पाने में अभी तक हम सक्षम नहीं है। वनों की रक्षा करके पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा जा सकता है। नदियों में बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अत्यंत कड़े कदम उठाने होंगे। भूमिगत जल को दूषित करने वाले लोगों को कानूनी रूप से कठोर दंड देना होगा और इस अपराध को रोकना होगा।

उपसंहार– सूखती हुई नदियों और कम होते जंगलों के कारण देशभर में रेगिस्तान बढ़ते जा रहे हैं। सरकार यद्यपि इस ओर से चिंतित है, लेकिन मानव जीवन पर मंडराते खतरे को रोकने के लिए अभी और बहुत मजबूत कदम उठाने की आवश्यकता है।

(3) आई.आई.टी– जे.ई.ई.

संकेत : भूमिका ✲ आई.आई.टी. का इतिहास ✲ योग्यताएँ ✲ अन्य उपलब्धियाँ।

भूमिका– इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी को आई.आई.टी. के नाम से जाना जाता है। भारत में इस समय सत्रह शहरों में आई.आई.टी. हैं। इनमें से आई.आई.टी. कानपुर, चेन्नई, दिल्ली, मुम्बई, खड़गपुर, रूडकी, धनबाद, रोपड़, हैदराबाद, मंडी और गुवाहाटी प्रमुख हैं। हर वर्ष 9850 बच्चों को ही प्रवेश मिल पाता है।

आई.आई.टी. का इतिहास– हमारे देश में आजादी से पहले कोई भी ऐसा कॉलेज नहीं था जहाँ टैक्नोलॉजी की पढ़ाई होती हो। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वायसराय की कार्यकारी समिति ने एक टेक्नोलॉजी इंस्टिट्यूट बनाने की सलाह दी। फिर पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ. बी.सी. रॉय ने एक कमेटी बनाई, जिसने कहा कि हमारे देश में टेक्नोलॉजी की जरूरत को समझते हुए उत्तर–दक्षिण और पूर्व–पश्चिम में एक–एक इंस्टिट्यूट बनाना चाहिए। इसके बाद पहला आई.आई.टी. 1950 में खड़गपुर में बनाया गया। फिर 1958 में मुम्बई, 1959 में कानपुर और चेन्नई तथा 1961 में दिल्ली में आई. आई.टी. की शुरूआत हुई। फिर 1994 में असम और 2001 में पहले से ही चल रही यूनिवर्सिटी ऑफ रूड़की को आई. आई.टी. रूड़की में बदला गया। हाल ही में सन् 2015–16 में आई.एस.एम. धनबाद को भी आई.आई.टी. का दर्जा मिल गया है।

योग्यताएँ– इंजीनियर बनने के लिए आपको 12वीं में विज्ञान (भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान/गणित) की पढ़ाई करनी होगी। बी.ए., बी.कॉम डिग्री कोर्स तीन साल का है लेकिन इंजीनियरिंग का ग्रेजुएट प्रोग्राम अमूमन चार साल का होता है।

जो भी बी.टेक. या बी.एस.सी., एम.एस.सी. एम.टेक के लिए आई.आई.टी. में प्रवेश लेना चाहता है, उसे सबसे पहले जे.ई.ई. (ज्वाइंट एंट्रेंस एग्जाम) देना पड़ता है। सत्रहों आई.आई.टी. और देश के एक–दो अच्छे–अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे बी.एच.यू. बनारस (जो आई.आई.टी. बनने के लिए प्रतीक्षा सूची मे है) में प्रवेश के लिए आई.आई.टी.–जे. ई.ई. के अन्तर्गत अब दो प्रवेश परीक्षाएँ होने लगी हैं– एक आई.आई.टी. मेन्स व आई.आई.टी. एडवांस होती हैं, लेकिन हर आई.आई.टी. अलग–अलग प्रवेश परीक्षा न होकर एक ही परीक्षा होती है और इसे कहते हैं, आई.आई.टी.–जे.ई.ई.। मान लीजिए कि आप इंजीनियर बनना चाहते हैं और आई. आई.टी. गुवाहाटी में प्रवेश लेना चाहते हैं तो आप दिल्ली में ही जे.ई.ई. परीक्षा दे सकते हैं अर्थात् आपको आई.आई.टी. में अलग–अलग फॉर्म भरकर परीक्षा देने की जरूरत नहीं है। एक ही टेस्ट के बाद जितना ऊपर आपका रैंक होगा, उतने ही आप इंजीनियर बनने के एक कदम नजदीक आते जाएँगे और अपने मनपसंद आई.आई.टी. में पढ़ पाएँगे।

अन्य उपलब्धियाँ– इंजीनियरिंग के कई तरह के कोर्स होते हैं– जैसे ऐरोस्पेस, बायोटेक्नोलॉजी, केमिकल, सिविल, कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी आदि। इसके अलावा आप पाँच साल के इंटेग्रेटेड एम. टेक प्रोग्राम में भी प्रवेश ले सकते हैं। आई.आई.टी. के विभिन्न संस्थानों में अब मैनेजमेंट की भी पढ़ाई करवाई जाती है। जैसे कि एम.बी.ए. इन टेक्नालॉजी मैनेजमेंट, एम.बी.ए. इन मैनेजमेंट सिस्टम और एम.बी.ए. इन टेलीकॉम सिस्टम मैनेजमेंट और आई.आई.टी. से आप पी.एच.डी. की डिग्री भी हासिल कर सकते हैं।

12. विद्यालय में खेलकूद की सामग्री की समुचित व्यवस्था कराने हेतु प्रधानाचार्य को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
रूपनगर, दिल्ली।

विषय : खेल का सामान मँगवाने के लिए अनुरोध।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम जैसा अच्छा रहा है, उसी तरह हमारे विद्यालय के छात्रों की खेल प्रतिभा भी किसी विद्यालय से कम नहीं हैं। गत वर्ष की क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता में हमारा विद्यालय हॉकी और बॉलीबॉल के खेल में सर्वप्रथम रहा। दौड़ में भी हमारे विद्यालय की दो छात्राओं ने पुरस्कार प्राप्त किए।

इससे पहले कि आगामी खेल प्रतियोगिताओं की तैयारी शुरू हो, आप खिलाड़ियों के लिए खेल के कुछ सामान उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें। हमारे विद्यालय में खेल –कूद की सामग्री का काफी अभाव है। क्रिकेट के बल्ले तथा हॉकी स्टिक टूटे हुए हैं। बॉलीबॉल और फुटबॉल के लिए हमें जाली (नेट) तथा गोल–पोस्ट उपलब्ध नहीं हैं। हमारे खेल प्रशिक्षक हमें लगन से खेल प्रशिक्षण देते हैं, किन्तु खेल के सामान के अभाव में प्रतियोगिता की तैयारी अधूरी ही रहती है।

हमें आशा है कि आप खेल का सामान उपलब्ध कराने की हमारी उचित मांग को स्वीकार करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
राहुल शर्मा
खेल सचिव,

कक्षा– दसवी ब
अनुक्रमांक – XXX
दिनांक : 14 जनवरी, 2018

अथवा

5 मार्च, 2018 के नवभारत टाइम्स समाचार–पत्र में सहायक अध्यापकों की 100 रिक्तियाँ विज्ञापित हुई हैं। विज्ञापन दिल्ली सेवा चयन बोर्ड के अध्यक्ष की ओर से है। स्वयं को योग्य उम्मीदवार साबित करते हुए एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :
सेवा में,
अध्यक्ष महोदय,
दिल्ली सेवा चयन बोर्ड,
दिल्ली।

विषय : सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन।

महोदय,

दिनांक 5 मार्च, 2018 को आपके विभाग की ओर से नवभारत टाइम्स में सहायक अध्यापक के रिक्त पदों के लिए विज्ञापन दिया गया था। इस पद के प्रत्याशी के रूप में मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है–

नाम – करण मलहोत्रा
पिता का नाम – श्री रमन मलहोत्रा
स्थायी पता – 44, दयालबाग, आगरा (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष – 25071314
जन्मतिथि – 15–12–1990

शैक्षिक योग्यता–

(क) हाई स्कूल 2006, प्रथम श्रेणी, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश।
(ख) सीनीयर स्कूल सर्टिफिकेट 2008, प्रथम श्रेणी, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली।
(ग) बी.एस.सी. ऑनर्स 2011, प्रथम श्रेणी, दिल्ली विश्वविद्यालय।
(घ) बी.एड., 2013, प्रथम श्रेणी, दिल्ली विश्वविद्यालय।

अनुभव–

तथागत माध्यमिक विद्यालय, गाजियाबाद में दो वर्ष शिक्षण अनुभव।

अध्यापन में मेरी विशेष रूचि है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपने मुझे यदि सेवा का अवसर प्रदान किया तो मैं पूरी निष्ठा से अपना कर्तव्य–पालन करूँगा।

धन्यवाद।
भवदीय
करण मलहोत्रा
दिनांक : 10 मार्च, 2018

13. होण्डा मोटर्स के मैनेजर को दो लेखाकारों की आवश्यकता है जिन्हें 5 वर्ष का अनुभव हो। 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

आवश्यकता है

लेखाकार-दो पद

अनुभव : किसी प्रतिष्ठित संस्थान में 5 वर्ष या अधिक का अनुभव, कंप्यूटर का ज्ञान आवश्यक।

वेतन योग्यतानुसार

संपर्क करें:

मैनेजर, ओम मोटर्स
20/05, सैक्टर-01, नोएडा (उ.प्र.)

अथवा

चाय के किसी प्रचलित ब्राण्ड के लिए 25–50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

रेड लेबल चाय

सुस्ती दूर भगाए
तन-मन में चुस्ती भर दे
अच्छी भी - सस्ती भी

250 ग्राम चाय - अब 99 रू. में

अब पूरे 7 रु. कम

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE